

दीक्षांत समारोह का संबोधन
मुख्य अतिथि



श्री गजेन्द्र सिंहजी
सहसंगठन मंत्रीश्री, अखिल भारतीय किसान संघ



जनवरी 08, 2024

जूनाग ढ कृषि विधिधालय
जूनाग ढ - ३६२00१
गुजरात



मुख्य अतिथि

श्री गजेन्द्र सिंहजी

सहसंगठन मंत्रीश्री, अखिल भारतीय किसान संघ

गुजरात के माननीय राज्यपाल एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री आचार्य देवव्रतजी; माननीय मंत्री, कृषि, पशुपालन, गाय प्रजनन, मत्स्य पालन, ग्रामीण विकास और ग्रामीण आवास, गुजरात सरकार, श्री राघवजी भाई पटेल, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित कुलपति डॉ. वी. पी. चोवटिया; रजिस्ट्रार डॉ. पी. एम. चौहान; गुजरात के एस.ए.यू.के माननीय कुलपति; प्रबंधन बोर्ड और अकादमिक परिषद के सदस्य, आमंत्रित अतिथि, विद्वान संकाय सदस्य, प्रिय छात्रो, प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधि, देवियो और सज्जनो।

मैं इस महत्वपूर्ण अवसर, जे.ए.यू.के १९वें दीक्षांत समारोह में आपके सामने खड़ा होकर बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मेरी हार्दिक बधाई उन सभी स्नातकों को है - चाहे वे मास्टर या डॉक्टरेट के उम्मीदवार हों - जो आज अपनी सुयोग्य डिग्रियाँ, पुरस्कार और विशिष्टताएँ प्राप्त कर रहे हैं। जैसा कि हम इस उपलब्धि का जश्न मना रहे हैं, मैं आशावाद से भरा हुआ हूँ कि आप में से प्रत्येक कृषि क्षेत्र की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, भारत की आबादी की लगातार बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक भोजन के उत्पादन में योगदान देंगे। आज आपकी उपलब्धियाँ न केवल व्यक्तिगत मील के पत्थर हैं बल्कि कृषि के महत्वपूर्ण क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान भी हैं। एक बार फिर बधाई, और मैं भविष्य में आपमें से प्रत्येक के सकारात्मक प्रभाव को देखने के लिए उत्सुक हूँ।

मैं प्रत्येक स्नातक को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ क्योंकि आप एक उज्वल और फलदायी करियर और एक आनंदमय जीवन की ओर यात्रा शुरू कर रहे हैं। इसके अलावा, मैं हमारे छात्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए गतिशील कुलपति के नेतृत्व में इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के समर्पित संकाय और कर्मचारियों की सराहना करता हूँ। विशेष बधाई उन विद्वान संकाय सदस्यों को है जिन्होंने हमारे छात्रों के साथ लगन से काम किया है, उन्हें ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों से समृद्ध किया है। आपके सामूहिक प्रयासों ने न केवल इन स्नातकों को सशक्त बनाया है बल्कि उन्हें विज्ञान, समाज और मानवता के क्षेत्र में विशिष्टता के साथ सेवा करने के लिए भी सक्षम बनाया है। उत्कृष्टता के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देने के लिए पूरे शैक्षणिक समुदाय को शुभकामनाएं।

दोस्तों खेती की शुरुआत मिट्टी और पानी से होती है। मिट्टी और पानी वह माध्यम हैं जिसमें पौधे बढ़ते हैं और आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करते हैं। बेहतर मिट्टी और जल प्रबंधन से सूखे और बाढ़ जैसी चरम जलवायु घटनाओं का सामना करने की भूमि की क्षमता में सुधार होता है। स्वस्थ मिट्टी वायुमंडल से कार्बन को अलग करके कार्बन सिंक के रूप में कार्य करती है, जिससे जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन दोनों प्रयासों में योगदान मिलता है। हालाँकि, पृथ्वी ग्रह पर पानी की कुल उपलब्धता समान रहती है, ताजे पानी की उपलब्धता कम हो जाती है। यह कहना दुखद है कि पृथ्वी पर २.२ अरब लोग सुरक्षित पानी तक पहुंच के बिना रह रहे हैं। हम आम कथन को हल्के में ले रहे हैं: अगली दुनिया में पानी के लिए लड़ाई होगी, लेकिन भविष्य में यह निश्चित रूप से होगा।

हमारे दूरदर्शी प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्रभाई मोदीने विश्व नेताओं के साथ विरोधाभासों के बीच युद्धों के वर्तमान युग में जी२० शिखर सम्मेलन का विषय “एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य” बिल्कुल सही चुना है। जी२० शिखर सम्मेलन में एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य विषय के तहत खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, विकास आदि जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। इनमें खाद्य-जलवायु-ऊर्जा प्रतिभूतियों में कृषि बड़ी भूमिका निभा सकती है। यह जरूरी है कि हम खाद्य उत्पादन के पारंपरिक कार्य से परे कृषि की भूमिका को फिर से परिभाषित करें। कृषि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में काम कर सकती है, जो न केवल जीविका के लिए जिम्मेदार है बल्कि जलवायु विनियमन और ऊर्जा उपलब्धता सुनिश्चित करने में उत्प्रेरक के रूप में भी काम कर सकती है। कृषि अपशिष्टों का उपयोग करके, कृषि-वोल्टाइक (आकाशीय खेती) की खोज और पवन ऊर्जा का उपयोग करके, हम कृषि परिदृश्य को बदल सकते हैं। भारत, विशेष रूप से, बहुआयामी कृषि पद्धतियों के लिए विशाल क्षमता रखता है जो खाद्य-जल-ऊर्जा गठजोड़ की जटिल चुनौतियों को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकता है।

अब समय आ गया है कि कार्बन खेती के जरिए किसानों की आय बढ़ाई जाए, जैसे खेती को वनस्पति, एग्रीवोल्टिक्स, एग्रो-पवन खेती के माध्यम से कार्बन पृथक्करण की ओर मोड़ना। ये जलवायु परिवर्तन को कम करने में भी मदद कर सकते हैं। कार्बन फार्मिंग मिट्टी और वनस्पति में संग्रहित कार्बन की मात्रा बढ़ाने (पृथक्करण), या पशुधन, मिट्टी, वनस्पति या न्यूनतम जुताई से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए कृषि पद्धतियों या भूमि उपयोग को बदलने की प्रक्रिया भी है। अब उद्योग कार्बन क्रेडिट के लिए मजबूर हैं। कार्बन क्रेडिट, जिसे कार्बन ऑफसेट के रूप में भी

जाना जाता है, ऐसे परमिट हैं जो मालिक को एक निश्चित मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड या अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करने की अनुमति देते हैं। एक कार्बन क्रेडिट एक टन कार्बन डाइऑक्साइड या अन्य ग्रीनहाउस गैसों के बराबर उत्सर्जन की अनुमति देता है। एक कार्बन क्रेडिट का अनुपालन और स्वैच्छिक कार्बन बाजारों पर मौद्रिक मूल्य रु ३३०० से ६६०० (\$ ४० से \$ ८०)।

अमेरिका, चीन और जर्मनी के बाद भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसकी औसत कीमत ३.७३७ ट्रिलियन डॉलर है। भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने वर्ष २०२६-२७ तक भारतीय अर्थव्यवस्था को वर्तमान \$ ३.७३७ ट्रिलियन से \$ ५ ट्रिलियन तक बढ़ाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में, कृषि क्षेत्र का लक्ष्य इस विकास को आगे बढ़ाने के लिए तकनीकी हस्तक्षेपों का लाभ उठाते हुए अपने योगदान को ०.७५ ट्रिलियन डॉलर से बढ़ाकर १.० ट्रिलियन डॉलर करना है।

मित्रों, हम भारत के आर्थिक प्रक्षेप पथ को आकार देने के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं, जो तेजी से विकसित हो रहे वैश्विक परिदृश्य के साथ तालमेल बनाए रखने की आवश्यकता है। विघटनकारी प्रौद्योगिकियों ने दुनिया भर में और विकास के इस क्षेत्र में हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। भारत और विशेष रूप से गुजरात ने महत्वपूर्ण प्रगति की है। मुझे प्रमुख व्यापक आर्थिक संकेतकों द्वारा उजागर गुजरात की उत्कृष्टता को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है: जैसेकि

गुजरात ने

- भारत के औद्योगिक उत्पादन का १८% भारत के केवल ११% कारखानों के साथ।
- १.३ मिलियन एमएसएमई।
- भारत की जीडीपी का ८.३%।
- २०००-२०२२ तक ५५ बिलियन अमेरिकी डॉलर एफडीआई (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश)।
- भारत के कुल निर्यात में विनिर्माण की हिस्सेदारी ३७%।

मुझे यकीन है कि "गेटवे टू द फ्यूचर" थीम के साथ वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट २०२४ के बाद गुजरात के ताज में कई और पंख जुड़ेंगे, जिसकी योजना १०-१२ जनवरी, २०२४ के दौरान बनाई गई है। इसके अलावा खाद्य सुरक्षा, उन्नत

प्रौद्योगिकी, स्टार्टअप, नवाचार और जीवन विज्ञान के विभिन्न मुद्दों पर गुजरात की विशिष्ट उपलब्धियों, सभी क्षेत्रों की ताकत और आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत@2047 के दृष्टिकोण का नेतृत्व करने की तैयारी को प्रदर्शित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

साथ ही, वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो 2024, 9 जनवरी 2024 से शुरू किया जाएगा, जिसमें डिजिटल इंडिया पहल, जलवायु स्मार्ट खेती, स्मार्ट विनिर्माण, एआई/एमएल, शिक्षा और पर्यावरण की उभरती प्रौद्योगिकियों सहित विघटनकारी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया जाएगा।

गुजरात माननीय प्रधान मंत्रीश्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत@2047 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य इन दृष्टिकोणों की दिशा में लगातार काम कर रहा है। वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 का एजेंडा जी20 और I₂U₂ (भारत, इजराइल, यूईई, यूएस) की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और विषयों को आगे बढ़ाना, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहुंच और जीवंतता का प्रसार करना होगा। I₂U₂ शिखर सम्मेलन-2022 के दौरान भारत में खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर की परियोजनाओं की घोषणा की गई।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि गुजरात सरकार ने जिलों में प्री-वाइब्रेंट गुजरात कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जूनागढ़ वाइब्रेंट के माध्यम से 9,200 करोड़ रुपये के एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिनमें से अधिकांश कृषि पर हैं क्योंकि जूनागढ़ और पड़ोसी जिलों में कृषि आधारित उद्योगों में बड़ी संभावनाएं हैं। इस कार्यक्रम का नेतृत्व कृषि मंत्री श्री राघवजी पटेल ने किया। जूनागढ़ का लक्ष्य 2024 में 4,000 करोड़ रुपये के निर्यात को छूने का है। हालांकि, जिले ने पिछले साल ही 8,000 करोड़ रुपये का निर्यात किया था।

उभरती विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के समकालीन युग में, कृषि को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। मुझे आपके साथ साझा करने दीजिए; विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के प्रभाव से कृषि क्षेत्र कैसे परिवर्तित होगा:

- विघटनकारी प्रौद्योगिकियों में पूरे कृषि क्षेत्र को बदलने की क्षमता है, जो प्राथमिक/द्वितीयक खेती प्रथाओं, बुआई, सिंचाई, पौधों की सुरक्षा, कटाई, पैकिंग, परिवहन, भंडारण से लेकर ग्राहकों के साथ विपणन तक के तरीकों को नया आकार दे रही है।

- इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया जैसी विघटनकारी तकनीकोंने वैश्विक स्तर पर विस्तार कार्यकर्ताओं, प्रौद्योगिकी डेवलपर्स, नवप्रवर्तकों या शोधकर्ताओं के बीच संचार पुल को मौलिक रूप से बदल दिया है।
- विघटनकारी प्रौद्योगिकियाँ नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं, किसानों द्वारा कृषि उत्पादन में नए विचारों के विकास को प्रोत्साहित करती हैं।
- स्टार्टअप और उद्यमी अक्सर कृषि उत्पादन के विभिन्न मुद्दों पर नवीन समाधान बनाने के लिए विघटनकारी प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाते हैं।
- क्लाउड कंप्यूटिंग और उन्नत संचार प्रौद्योगिकियां वास्तविक समय के साथ-साथ चरम जलवायु, चक्रवात आदि की बेमौसम घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम बनाती हैं जो कटाई की योजना बनाने में सक्षम बनाती हैं।
- विघटनकारी प्रौद्योगिकियां अक्सर प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करती हैं, जिससे वे अधिक कुशल और लागत प्रभावी बन जाती हैं। ऑटोमेशन की तरह, रोबोटिक्स और एआई अनिश्चित जलवायु और श्रम की कमी के युग में सटीक कृषि के लिए इनपुट दक्षता और कृषि कार्यों में समयबद्धता को बढ़ा रहे हैं।
- ई-कॉमर्स के उद्भव ने किसानों को उच्च कीमतों का लाभ उठाने के लिए वैश्विक मंच पर अपनी उपज बेचने में सक्षम बनाया है।
- विघटनकारी प्रौद्योगिकियाँ अक्सर वैश्विक प्रभाव डालती हैं, भौगोलिक बाधाओं को तोड़ती हैं और किसानों और उपभोक्ताओं को विश्वव्यापी स्तर पर जोड़ती हैं।

विघटनकारी प्रौद्योगिकियोंने प्रत्येक क्षेत्र को चारों ओर से घेर लिया है। लेकिन मेरे विचार में, उन सभी को कृषि क्षेत्र के लिए विवेक और समझ के साथ एस.डी.जी (Sustainable Developments Goals) को अपनाना होगा। यदि हम भविष्य में रणनीतिक रूप से खुद को कृषि के साथ जोड़ते हैं, तो मुझे विश्वास है कि एक समृद्ध भविष्य इस क्षेत्र की प्रतीक्षा कर रहा है। मैं कृषि के लिए महत्वपूर्ण विकास की कल्पना करता हूँ, बशर्ते हम स्थायी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में ईमानदारी से आगे बढ़ें।

मैं वर्तमान में भारत में हमारे कृषि क्षेत्र की उत्कृष्टता पर कुछ तथ्य आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

- भारत दूध, मसाले, दालें, चाय, काजू और जूट के उत्पादन में दुनिया में सबसे आगे है, और चावल, गेहूँ, तिलहन, फल, सब्जियां, गन्ना और कपास के

उत्पादन में दूसरे स्थान पर है।

- यह मसालों, मछली, मुर्गीपालन, पशुधन और वृक्षारोपण फसलों के अग्रणी उत्पादकों में से एक है।
- भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड ३३०.५ मिलियन टन (एमटी) होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग १५ मिलियन टन अधिक है।
- भारत का बागवानी उत्पादन २०२२-२३ में १.४ प्रतिशत बढ़कर ३५१.९२ मीट्रिक टन के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंचने का अनुमान है, जो कि उच्च उत्पादकता के कारण पिछले वर्ष की तुलना में १.३७% की वृद्धि है।
- चालू वर्ष के दौरान दलहन, तिलहन, कपास और गन्ने का कुल उत्पादन क्रमशः २७.५ मीट्रिक टन, ४१.० मीट्रिक टन, ३४.३५ मिलियन गांठ और ४९.४२ मीट्रिक टन होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष के उत्पादन से अधिक है। हालाँकि, सबसे बड़ी चिंता तिलहनों की रहेगी, ऐसे में भारी घाटा नज़र आ रहा है। जब तक कि भारत कुछ हद तक बीटी कॉटन जैसी तकनीकी सफलता के माध्यम से दूसरी पीली क्रांति से कम कुछ हासिल करने में सफल नहीं हो जाता, या उपज दर में परिवर्तन के साथ-साथ तिलहन के तहत क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विस्तार नहीं होता।
- फलों, सब्जियों, वृक्षारोपण फसलों, फूलों और शहद का उत्पादन भी बढ़ने की उम्मीद है।
- वर्ष २०२२-२३ में फलों का उत्पादन १०८.३४ मिलियन टन होने का अनुमान है, जबकि पिछले वर्ष यह १०७.५१ मिलियन टन था।
- वर्ष २०२२-२३ में सब्जियों का उत्पादन २१२.९१ मिलियन टन होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष २०९.१४ मिलियन टन था।
- वृक्षारोपण फसलों का उत्पादन २०२१-२२ में १५.७६ मिलियन टन से बढ़कर २०२२-२३ में १६.०५ मिलियन टन होने का अनुमान है, जो लगभग १.७८% की वृद्धि है।
- आलू का उत्पादन ६०.५४ मिलियन टन होने की उम्मीद है, जो पिछले साल ५६.१८ मिलियन टन था।

भारत में कृषि क्षेत्र की लाभप्रद स्थितियों में भी, मैं आपके साथ कुछ मुद्दे भी साझा करना चाहूंगा। प्रौद्योगिकी में तेजी से प्रगति से भारत में कृषि क्षेत्र में क्रांति आ

रही है, लेकिन इस क्षेत्र को अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो इसकी उत्पादकता और स्थिरता को प्रभावित करती हैं।

- पानी की कमी और खराब सिंचाई जल प्रबंधन प्रथाएँ
- जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ
- प्रौद्योगिकी और अनुसंधान तक सीमित पहुंच
- मृदा क्षरण एवं भूमि कटाव
- छोटी जोत
- ऋण और वित्त तक पहुंच का अभाव:
- पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ
- अपर्याप्त कृषि बुनियादी ढाँचा:
- बाज़ार में अस्थिरता और कीमत में उतार-चढ़ाव
- किसानों के सशक्तिकरण का अभाव
- खेत मजदूरों की कमी

कृषि और बागवानी उत्पादन बढ़ाने में फसल का रकबा और उपज बढ़ाना शामिल है। इसके लिए अधिक भूमि और पानी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे जीवन के सभी पहलुओं में जल उत्पादकता में सुधार पर जोर दिया जा सके। भूमि और जल संसाधनों में सुधार पर ध्यान देने के साथ-साथ फसल जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई के समय और मात्रा का प्रबंधन करना महत्वपूर्ण है। पर्याप्त विकास क्षमता और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के साथ कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र को भारत की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी माना जाता है। गुणवत्ता आश्वासन के लिए गुजरात, विशेषकर पश्चिमी भारत में प्रसंस्करण मशीनरी के लिए एक परीक्षण केंद्र स्थापित करना आवश्यक है। कृषि-प्रसंस्करण, वैश्विक विपणन और आपूर्ति की अपनी क्षमता के साथ, रोजगार और आय सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच, सिंचित फसल सूची के लिए रिमोट सेंसिंग सहित उपग्रह इमेजरी और विश्लेषण, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। ड्रोन, रोबोटिक्स, सेंसर, रिमोट सेंसिंग, जीआईएस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी सटीक प्रौद्योगिकियां श्रम चुनौतियों पर काबू पाने और कृषि कार्यों में इनपुट के समय पर और सटीक अनुप्रयोग को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय कृषि को प्रभावित करने वाली वर्तमान चुनौतियाँ सीमित ज्ञान और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। सिंचाई, बाज़ार और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी से जुड़ी समस्याएं किसानों के कामकाज में भारी लागत बढ़ाती हैं। इसके अलावा, कोई उचित वितरण प्रणाली भी नहीं है। कृषि में विकास लाने के लिए कई योजनाएं हैं। लेकिन कोई प्रभावी वितरण तंत्र नहीं है जो उत्पादकता में सुधार कर सके, लागत कम कर सके या जमीनी स्तर पर मूल्य प्राप्ति बढ़ा सके। इसके अलावा, सरकारी समर्थन के बिना, मुद्दे और भी बदतर हो जाते हैं। इस प्रकार, संविदा खेती भारतीय कृषि क्षेत्र के लिए एक समाधान हो सकती है, लेकिन इस पर गंभीरता से विचार, नवाचार और बेहतर नीतियों की आवश्यकता है, ताकि न तो व्यावसायिक घरानों और न ही किसानों को भारी नुकसान हो।

मुझे ५-सितारा रेटेड संस्थान, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के हरे-भरे वातावरण में आकर खुशी हो रही है। उन्नीसवें दीक्षांत समारोह को संबोधित करने के निमंत्रण के लिए कुलाधिपति और कुलपति को मेरा हार्दिक धन्यवाद। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, के एम मुंशी, दयानंद सरस्वती जैसे प्रतिष्ठित नेताओं और विक्रम साराभाई, टाटा, रिलायंस, अदानी, निरमा और सुजलॉन जैसे विज्ञान और व्यवसाय के अग्रणी लोगों की भूमि पर खड़ा होना सम्मान की बात है। ये आंकड़े गुजरात और भारत के लिए गर्व का स्रोत हैं, जो विश्व स्तर पर प्रेरणा के रूप में काम कर रहे हैं। आइए हम अपने वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी पर भी गर्व करें, जो एक विश्व स्तरीय नेता और सुधारक हैं, जो I₂U₂ और जी२० सहित वैश्विक मंच पर भारत का नेतृत्व कर रहे हैं।

इस समय, मैं जेएयू अधिकारियों, संकायों और छात्रों को अनुसंधान और विकास परिणामों के पेटेंट पंजीकरण को प्राथमिकता देने का प्रस्ताव देता हूँ।

जय हिन्द

जय भारत

धन्यवाद

